Course-10, Unit-3/C

सामाजिक अधिगम (Social learning) -

सामाजिक अधिगम के सिद्धान्त का प्रतिपादन अल्बर्ट बंडूरा ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम इस मान्यता पर आधारित है कि बालक अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक दूसरे से सीखते हैं। समाज द्वारा स्वीकार किये जाने वाले व्यवहार को अपनाना तथा वर्जित व्यवहार को नकारना ही सामाजिक अधिगम है। सामाजिक अधिगम सिद्धान्त को व्यवहारवाद और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्तों के बीच की योजक कड़ी भी कहा जाता है, क्योंकि यह सिद्धान्त ध्यान (attention), अभिप्रेरणा (motivation), स्मृति (memory) तीनों को संयोजित करता है इसलिये अल्बर्ट बन्दुरा को प्रथम मानव व्यवहार-संज्ञानवादी मनोवैज्ञानिक कहते हैं। इस सिद्धान्त की सार्थकता को सिद्ध करने के लिये बंडूरा ने एक बालक पर बोबो डॉल का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से किया -

बन्दुरा का प्रयोग -

बन्दुरा ने एक बालक पर बोबोडॉल प्रयोग किया। बन्दुरा ने एक बालक को तीन तरह की मूवी (फिल्म) दिखाई गयी।

प्रथम मूवी में सामाजिक मूल्य (Social value) आधारित थी. जिसे देखकर बालक बोबोडाल के साथ सामाजिक व्यवहार दर्शाता है. (Social behavior)

दूसरी मूवी प्रेम आधारित थी जिसे देखकर बालक डॉल से स्नेह करता है, उसे सहलाता है.

तीसरी मूवी हिंसात्मक (Violent) दृश्य-युक्त थी। जिसे देख कर बालक गुड़िया की गर्दन को तोड़ देता है।

इस प्रकार इस प्रयोग के आधार पर बन्दुरा ने यह निष्कर्ष निकाला कि छोटे बच्चों को यह पता नहीं होता कि उनको क्या सीखना चाहिये और क्या नहीं सीखना चाहिये। इसलिये बच्चों के सामने हमेशा आदर्श व्यवहार के प्रतिमान (Ideal model) को प्रस्तुत करना चाहिये।

बन्डूरा ने सामाजिक अधिगम के 4 उपाय बताये है-

1) ध्यान
2) अवधारणा
3) पुनः प्रस्तुतीकरण
4) पुनर्बलन

1) ध्यान या अवधान (Attention) -
ध्यान या अवधान (Attention) - को आकर्षक एवं अधिगम विषयवस्तु (जिसको सीखना है) को आकर्षक एवं प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करना चाहिये। विषयवस्तु को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना ही अवधान कहलाता है।

2) अवधारणा या धारण करना (Retention) -
अधिगम के लिये प्रस्तुत किये गये विषय वस्तु को जितना सिखा गया है उसे धारण करना कहते है।

3) पुनः प्रस्तुतीकरण (Reproduction) -
उस वस्तु का अधिगम कम प्रभावशाली हो तो अधिगम की विषय वस्तु को पुनः प्रस्तुत करना चाहिये।
जैसे-
छात्र किसी विषय वस्तु को कम सीख पाते है तो उसको पुनः दोहराना चाहिये। सीखाने के लिये मॉडल, चित्र, चार्ट आदि सामग्री का उपयोग करना चाहिये।

4) पुनर्बलन (Reinforcement / Rehabilitation) -
विषय वस्तु की पुनः प्रस्तुतीकरण के पश्चात यदि बालक अधिगम की प्रतिपुष्टि (feedback) करे है तो यह प्रतिपुष्टि (feedback) ही पुनर्बलन कहलाती है। बालक यदि उसे अच्छी तरह से सीख लेता है तो उसकी प्रशंसा द्वारा उसे प्रेरित करना चाहिये।

बन्डूरा ने सामाजिक अधिगम के निम्नलिखित कारक बताये है —
* अभिप्रेरणा (Motivation)
* स्व नियन्त्रण (self - control)
* स्व विवेक (self - discretion)
* स्व निर्णय (self - determination)
* स्व - अनुक्रिया (self - response)

सामाजिक अधिगम सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व -

(1) बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त है।

(2) यदि बच्चों के सामने अच्छे गुणों वाले व्यवहार को प्रदर्शित किया जाता है, तो उस बालक में वांछित गुणों का विकास किया जा सकता है।

(3) सामाजिक अधिगम का आधार अनुकरण (Imitation) है।

(4) बच्चों के सामने आदर्श मॉडल (Ideal model) प्रस्तुत करना चाहिये।

(5) बच्चों के सामने बुरे व्यवहार, अनैतिक मॉडल से बचना चाहिये।